बम्बई 2/1/1964, गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो.....

जिसको मात–पिता कहते हो तो ज़रूर फरमान तो पिता ही करेंगे। भले ये मात-पिता कम्बाइण्ड हैं, यही मुश्किल बात है जो मनुष्य को समझना बड़ा डिफीकल्ट है। किसको कहते हैं 'तुम मात-पिता, हम बालक तेरे' यही मुख्य बात यहाँ समझने की है। ये निराकार को (यानी) परमपिता परमात्मा को जिसको फिर पिता कहा जाता है, उसको ही फिर माता भी कहें ये वण्डरफुल बात है ; और समझने की भी यही मूल बात है। यह भी समझ आती है कि जबकि परमपिता मनुष्य सृष्टि रचेगा तो माता तो ज़रूर चाहिए। इस बात को अति गुह्य समझाते हैं। कभी भी कोई मनुष्य मात्र की बुद्धि में ये नहीं आए सिवाय तुम अनुभवी बच्चों को(के)। यह कोई की बुद्धि में बैठाने के लिए बहुत टाइम कोई को लगे। जबकि अच्छी तरह से समझ जाए कि.....जबकि सबका बाप है तो सबकी माँ भी तो ज़रूर चाहिए। और वो है निराकार। निराकार बाप हुआ और माँ फिर किसको रखें? किसको पकड़ें? कोई शादी तो नहीं किया होगा। ये सभी बातें बहुत समझने की हैं और ये है अति गुह्य बात समझने की। फिर ये नए तो इतने मुश्किल समझेंगे, ये पुराने में भी कोई मुश्किल ही इस बात को समझते हैं और समझ करके ऐसा स्मृति में रहता है। बच्चों को तो स्मृति में रहे ना। किसको बच्चा कोई भी हो, 5 हो, 10 हो (तो) माँ-बाप की स्मृति में तो ज़रूर रहेगा ना। भारत में खास यह पुकारते हैं, जैसे अभी गीत सुना– तुम मात-पिता...। अभी यह अक्षर तो बड़ा वण्डर है; क्योंकि मंदिर में जाते हैं तो ल०ना० को मात-पिता कह देते हैं, कभी राधे–कृष्ण (को भी) कह देते हैं; क्योंकि भारतवासी हैं तो ब्लाइण्ड फेथ वाले, पूजा करने वाले। राधे–कृष्ण तो प्रिन्स एण्ड प्रिन्सेज हैं। उनको तो कभी कोई जट उल्लू-पाजी हो ना, वो भी कभी ऐसे नहीं कहे– तुम मात-पिता हम बालक तेरे या त्वमेव माताश्च पिता ; क्योंकि जाकर गाते हैं। श्रीकृष्ण के मंदिर में भी जाएँगे या राधे-कृष्ण के मंदिर में भी जाएँगे, ये एक टेव पड़ जाती है ....त्वमेव माताश्च पिता 'तुम मात-पिता, हम बालक तेरे ; परन्तु ये बातें बिल्कुल ही न्यारी हैं। राधे-कृष्ण को तो कहा नहीं जाता है। ल०ना० को ही कह सकते हैं; परन्तु उनके बच्चे कहें 'मात-पिता और फिर सुख घनेरे'। तो मनुष्य समझते हैं कि जिसके पास सम्पत्ति बहुत है, धन बहुत है वो अभी भी कहते हैं कि स्वर्ग है। जिसके पास धन है, बहुत महल है तो ज़रूर समझेंगे कि इस मात-पिता से जिसके पास हमने जन्म लिया है बहुत सुख है; परन्तु यह सुख क्यों मिला? क्योंकि आगे जन्म में कुछ अच्छा कर्तव्य किया है जो फिर हमको ऐसे साहुकार घर में जन्म मिला है। फिर भी कर्म की बात आ जाती है। अच्छा, यहाँ जो कहा जाता है 'तुम मात-पिता, हम बालक तेरे', अब ये बच्चे जानते हैं ना। इस सारी दुनिया में कभी भी कोई समझ न सके कि एक जो परमपिता परमात्मा है, जिसके हम सभी बच्चे हैं, जो रचता है, भले अगर कोई कह दे .. बच्चे हैं, जैसे वो निराकार है, वैसे हम भी निराकार हैं; पर निराकार सृष्टि कैसे रचते हैं? ज़रूर माता बिगर तो सृष्टि रची ही नहीं जा सकती है। देखो, इस समय सृष्टि रचने का यह वण्डरफुल है ; क्योंकि एक तो परमात्मा रचता है ज़रूर; पर वो रचता होगा ज़रूर नई दुनिया का, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। ऐसे तो नहीं, उसको कोई रचता कहेगा, पुरानी दुनिया रचते होंगे। ये भी तो नहीं। तो ज़रूर उनको पुरानी दुनिया में आ

करके नई दुनिया रचनी पड़े। वो पुरानी दुनिया में आ करके नई दुनिया कैसे रचते हैं यह कोई भी नहीं जान सकते हैं और जो बच्चे यहाँ हैं उनको भी इस समय यह स्मृति में नहीं आता है। क्यों? जबकि हैं बरोबर उनकी संतान तो याद तो करना चाहिए ना। ...याद नहीं कर सकते हैं, भूल जाते हैं। क्यों? वण्डरफुल बात है ना। वो तो कॉमन बात है। मात-पिता को, जो अलग हैं बाप अलग है, माता अलग है और बच्चे देखते हैं यह माता है, यह पिता है। यह एक बड़ी गुह्य बात है कि निराकार को हम कह देवें, सृष्टि का रचता है भी ज़रूर, सबका बाप भी ज़रूर है, यह भी तो ज़रूर है; परन्तु माता कहाँ से आती है? क्या होता है? अभी विचार करेंगे, तो जब अज्ञान काल में थे ....तब कुछ पता नहीं पड़ता था। ऐसे ही बोलते थे जैसे सभी बोलते हैं। अभी बच्चे बिल्कुल अच्छी तरह से जान गए हैं। यह तो बड़ी गुह्य बात है, बड़ी वण्डरफुल बात है कि निराकार को मात-पिता रचना है ज़रूर। माता चाहिए। बाप खुद बैठ करके समझाते हैं कि मैं बच्चे कैसे एडॉप्ट करता हूँ; क्योंकि वो पेट से तो निकलने की बात नहीं रहती है; क्योंकि ब्रह्मा के मुखकमल से बहुत बच्चे रचना है यानी स्त्री से बाप को। स्त्री से बाप को बहुत बच्चे। तो कैसे रचते हैं? कहते हैं– मैं आता हूँ, इस शरीर को धारण करता हूँ। धारण करके फिर इनके मुख द्वारा, जिसका नाम प्रजापिता रखता हूँ ; परन्तु वास्तव में यह मनुष्य सृष्टि का रचने वाला पिता भी है, तो माता है जिसके मुख से मैं बच्चे रचता हूँ। मनुष्य कुख से बच्चे पैदा करते हैं, मैं मुख से एडॉप्ट करता हूँ। इस रीति से बच्चे एडॉप्ट करना सिर्फ बाप का काम है। सन्यासी नहीं कर सकते हैं। हाँ, ये एडॉप्ट करते हैं; परन्तु वो कहे जाते हैं फॉलोअर्स, जिज्ञासु, शिष्य, चेले। उनके नाम भी ये पड़ते हैं। यह तो हुई रचना की बात। वो बाप ही बैठ करके (समझाते हैं), और तो कोई समझाय न सके। तो बाप बैठ करके समझाते हैं कि बच्चे, मैं इन द्वारा (यानी) इनमें प्रवेश कर फिर यह मुखवंशावली (रचना रचता हूँ), जो कहती है तुम मात-पिता...। अब यहाँ माता सिद्ध होती है यह और पिता सिद्ध होता है वो; क्योंकि इसमें प्रवेश करके रचते हैं। जिसमें रचते हैं, ये बुढ्ढा प्रजापिता भी हो गई, तो वास्तव में माता भी हो गई। सही में बुढ्ढी (है) ना। बहुत बच्चे किसके होंगे! अभी बच्चों को मात-पिता को ज़रूर याद करना पड़े। उनका नाम बच्चों ने रख दिया है या लॉ मुजीब ऐसे भी कहा जाए कि बाप और दादा; क्योंकि प्रॉपर्टी मिलती है बाप से, डाडे से। ये दादा की तो प्रॉपर्टी है नहीं और तुम बनते हो वारिस। तो इस हालत में उनको बापदादा भी कहते हो। यह कहना है ज़रूर; क्योंकि अर्थ है कि बरोबर हमको प्रॉपर्टी कोई पिता ब्रह्मा से नहीं लेनी हैं। प्रॉपर्टी उनसे लेनी है और ये जो दादा है, उनको भी उनसे लेनी है; परन्तु इनको दादा भी कहा जाए तो माता भी कहा जाए, दोनों ही कहा जाए; नहीं तो मात-पिता सिद्ध कैसे होवें? हैं ज़रूर। इन माता-पिता बगैर बच्चे कहाँ से आवे? सिर्फ पिता से थोड़े ही बच्चे पैदा हो सकते हैं या सिर्फ माता से थोड़े ही बच्चे पैदा होते हैं। नहीं। बाप भी चाहिए, माता भी चाहिए।.....(बाप कहते हैं ना) मैं गुह्य ते गुह्य बातें समझाता हूँ और अच्छी तरह से समझने की बात है, धारण करने की बात है और सिमरन करने की बात है कि बरोबर हे बाबा! आप पिता भी हो और इस माता से हमको जन्म दिया है और बरोबर हमको वर्सा भी याद आता है। बाप को याद करने

से वर्सा मिलेगा, माता को याद करने से वर्सा नहीं मिलता है; परन्तु माता से जन्म लिया है, वो तो याद है ना। याद तो फिर भी वर्से के लिए बाप से(को) करना है; इसलिए बाप खुद भी कहते हैं कि इन मम्मा को याद नहीं करना है। ज्ञान से समझ जाना है कि कैसे बाप पतित दुनिया में, पतित शरीर में आ करके (पतितों को पावन बनाते हैं)। इसको पराई दुनिया कहा जाता है, जिनमें मैं प्रवेश करता हूँ, फिर वो हमारा बच्चा भी हो गया और तुम बच्चों का बाप भी हो गया और स्त्री होने के कारण तुम बच्चे भी हो गए। तो सिद्ध होवे कि हम क्यों गाते हैं, ये मनुष्य क्यों गाते हैं– शंकर द्वारा विनाश? यह ड्रामा में नूँध है। ये नाम गाए हुए हैं; इसलिए गायन में आते हैं ; क्योंकि तीन देवताएँ जो मुख्य रखे हुए हैं यहाँ भारत में। तो बरोबर उन्हों द्वारा विनाश भी हो जाता है और नाम भी रख दिया है। बाकी यह तो समझते हो ; क्योंकि, हमारे लिए राजधानी नई है, तो विनाश तो ज़रूर होना है और विनाश देखते हो कैसे हो रहा है। कोई नई बात तो नहीं है ना। यह विनाश तो होना ही है। उनके लिए फुल तैयारियाँ होती जा रही हैं और तुम्हारी राजाई के लिए नई दुनिया तो ज़रूर चाहिए ना। तुम यहाँ इतने सब जो ढेर के ढेर राजाई पद पा रहे हो सो तो जानते हो ना। तुम अंधश्रद्धा वाले तो नहीं हो? तुम ऐसे तो नहीं हो, कोई तुमको कहे– तुम मूर्ख हो, अंधश्रद्धा से जिसने जो कहा सो मान लेते हो? वो तो बात नहीं है? बाबा खुद भी कहते हैं ऐसे कभी नहीं मानना जब तक कि निश्चय न हो। ऐसे नहीं कि .. रामचन्द्र की सीता चुराई गई। सत्य है। रावण चुराय गया, सो भी इतना बड़ा–2 रावण.. हनुमान की पूँछ को आग लगाई तो लंका को जला दिया। हाँ, सत्य-3 बिल्कुल नहीं करना, कभी भी नहीं। न समझो तो अच्छी तरह से समझो। अगर न समझेंगे तो बेसमझ के बेसमझ रह जाएँगे। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि रह जाएँगे और पद भी नहीं मिलेंगे। तो हरेक बात अगर कोई न समझते हैं तो समझें। तो समझाते हैं (कि) आगे जो कुछ भी सुनते आए हो, ये सभी भक्तिमार्ग (है)। भक्तिमार्ग में फल मिलता है। कोई भी भक्ति करो, तीर्थ करो, जप करो, तप करो या दान करो .. अल्पकाल क्षणभंगुर सुख मिलता ही है। उनकी रिज़ल्ट इस जन्म में या दूसरे जन्म में अल्पकाल क्षणभंगुर (है)। देखो, तीर्थ पर भी जाते हैं बाहर रह करके। अच्छा, तो फिर कुछ समय पवित्र तो रहते हैं ना। यह भी कोई(कुछ) अच्छा है। वो(उस) समय पाप नहीं होंगे। दो-दो, तीन-तीन मास जाते हैं, जाकर थोड़ा दान-पुण्य करते हैं, कुछ भी करते हैं तो उनको एवज़ (में) अल्पकाल क्षणभंगुर सुख मिलता है। जिसको ही फिर मिलाकर के कहा जाता है कागविष्टा समान सुख। वो है भी बरोबर। बच्चे जानते हैं, समझ सकते हैं, बुद्धि है। बंदर बुद्धि तो नहीं हैं ना। अभी तो बंदर से (मंदिर) लायक बुद्धि है। जो भी अभी ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण नहीं हैं...उनको कहा ही जाता है आइरन एज्ड पत्थरबुद्धि और जो समझ जाते हैं उनको कहा जाता है पारसबुद्धि। तो बरोबर सतयुग में पारसबुद्धि रहते थे; क्योंकि पारसनाथ और पारसनाथिनी का राज्य था। सोने-हीरे के महल थे। अभी तो कोई सोने-वोने की बात ही नहीं है। अभी तो पत्थर ही पत्थर हैं बरोबर।.....पारसबुद्धि भी तो मशहूर है ना। पारसबुद्धि को पत्थरबुद्धि कौन बनाते हैं? यह तो बच्चे जानते हैं कि बरोबर ये पाँच विकार रूपी रावण (पत्थरबुद्धि बनाते हैं) और हॉफ एण्ड हॉफ है। उनको टाइम तो लगेगा ना! पत्थरबुद्धि

भी पूरा पत्थर बन जाए तो भी तो टाइम लगता है ना। तो देखो सब पत्थरबुद्धि बन जाते हैं तब पारसबुद्धि बनाने वाला बाप आते हैं। पारसनाथ (उनको) कहा जाता है स्वर्ग के मालिक। (उनको) पारसनाथ कहा जाता है और अभी बच्चे जानते हैं, (ख्याल) रहना है बच्चों को, हमेशा याद क्या करना है। बाबा कहते हैं अभी बच्चों को यह कुछ ज्ञान मिला है। देखो, फिर कितना सहज कर देते हैं। यह तो तुम समझ गए ना, ये तो बहुत ही रोज़-2 समझाते हैं। कितना समझा कर कितना समझें! बीज और झाड़, है तो सेकण्ड की समझ ; परन्तु अगर झाड़ के डिटेल में जाएं तो फिर डार, फिर टार ,फिर टारियों में कैसे पत्ते-पत्ते, फिर उनमें टारियाँ। यह तो बहुत लम्बा और ..यूँ तो बीज से यह झाड़ निकला, खतम। तो बस, दो बात हो जाती है बीज और झाड़, बाकी है डिटेल। डिटेल तो बहुत समझाते रहते हैं और समझाते रहेंगे। फिर नटशेल में कह देते हैं बच्चे, यहाँ भी आते हो, बैठते हो, जहाँ भी जाते हो, अपने बाप को (याद करो); क्योंकि वर्सा मिलना है ना उनके(उनका)। अभी माँ को याद करने की दरकार नहीं है, (याद करना है) बाप को। मतलब लेना चाहिए ना। अच्छा, बाप को याद करो, सो तो ज़रूर माँ से जन्म लिया होगा तब ही तो बाप को याद करते हो, नहीं तो तुम लोग आए कहाँ से? बाप जो कहते हैं मुझे याद करो तो ज़रूर बच्चों को कहते हैं। तो बच्चों ने ज़रूर माता द्वारा जन्म लिया होगा या ऐसे ही निकल गए होंगे? परन्तु फिर तुमको(तुमने) जन्म तो लिया। किसलिए? बाप से वर्सा लेने के लिए। तो बस, माँ को छोड़ो। देहधारियों सबको छोड़ो, देह को भी छोड़ो। अभी अपन को आत्मा ही निश्चय करके और तुमको वर्सा लेना है बाप से। बाप से ये बच्चों को वर्सा लेना है। अभी ये बच्चे समझ गए। बच्चे अच्छी तरह समझ गए (कि) हम आत्मा हैं और अभी बाप के बने हैं। अभी हम जिस्मानी ब्रह्मा के यानी मात-पिता के बच्चे बने हैं। यूँ हैं रूहानी बाप के और बाप फिर कहते हैं बच्चों को कि बच्चे, अभी खेल पूरा हुआ और मुझे याद करो। बस, ये दो बात तो बिल्कुल सहज समझा ही देते हैं सबको और किसको भी समझाना यह बहुत सहज है कि भई वो बेहद का बाप है। बेहद का बाप नई सृष्टि रचते हैं। तो नई सृष्टि भारत था। यह मालिक था उनका। अभी कलियुग है ,यह मालिक नहीं है। तो ज़रूर कलहयुग को फिर सतयुग बनाने (वाला) बाप है ना। वो अभी बाप ही बैठ करके कहते हैं कि तुमने बहुत जन्म (हद का वर्सा लिया है), दूसरा कोई कह नहीं सकेगा, साधु-संत-महात्मा भी नहीं कहेंगे और याद .... हैं– हे बच्चो! तुमने हर जन्म बाप से हद का वर्सा लिया है ; क्योंकि ऐसे तो नहीं कहेंगे कि हद का वर्सा कोई स्वर्ग में मिलता है। स्वर्ग में तो है ही बेहद का वर्सा। ....कहा जाता है बेहद का बादशाह, सारी सृष्टि के मालिक। हद का जब कहते हैं ना तो द्वापर से जैसे शुरू होता है। वो बेहद का है। वो तो प्रालब्ध है। वहाँ बच्चों को है ही बेहद की बादशाही। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। प्रजा भी ये समझती है। अभी प्रजा तो नहीं समझती है हम कोई बेहद के मालिक हैं, सारी सृष्टि के मालिक हैं। अभी तो टुकड़े-2 के मालिक भी एकदम कोई नहीं हैं। एक/दो को पानी में आने नहीं देते, एक/दो को नदी में नहीं आने देते, एक/दो को आसमान में नहीं आने देते। वहाँ(यहाँ) प्रजा भी ऐसे ही समझती है। वहाँ प्रजा क्या समझेगी? हम विश्व के मालिक हैं। हमारा राजा, महारानी श्री ल० महाराजा श्री ना० विश्व के मालिक हैं। और तो कोई है नहीं।

फिर उसको समझने की कोई दरकार है ही तो फिर समझें क्या और? ये तो यहाँ समझाया जाता है, बाकी है ही जब विश्व का मालिक, तो उनको कहने की तो दरकार ही नहीं रह(ती) कि हम कोई विश्व के मालिक हैं। वो तो है ही। ये हम समझाने के लिए कहते हैं कि बस, वहाँ तो विश्व में बच्चों का एक ही राज्य रहता है। वहाँ तो कोई हद की बादशाही नहीं थी। (वहाँ) बेहद की बादशाही (थी) और भारत को थी। ऐसे नहीं कि भारत.....भारत क्या था! अभी ये किसकी बुद्धि में ही नहीं है, एकदम भूल गए हैं। अब बात है 5000 (वर्ष) की, उनको इन्होंने शास्त्रों में, कल्प लाखों वर्षों का है, हज़ारों वर्षों का है, फलाना है, ये है, (इस तरह) भुलाय-3 करके एकदम भुलाय दिया है। भूल तो सकते हैं ना! शास्त्रों में लिखा हुआ है कितने ये लाखों वर्ष तो बिचारे याद करते हैं, लाखों वर्ष (लिख देने से) तो फिर भूल गए हैं। सभी बातें ही सब भूल गई हैं। घोर अंधियारे में डाल दिया है। है तो 5000 वर्ष की बात। तो बाप समझाते हैं कि कोई को भी क्या समझाना है? बच्चे, तुम बाप से हद का वर्सा लेते आए हो और वहाँ तो बेहद का ही हुआ, यह अब समझते हो। दूसरे मनुष्य नहीं समझते हैं, वो तो एकदम पत्थरबुद्धि हैं। तुम बच्चों को शिक्षा मिल रही है कि अभी जो तुम बच्चे बाप से वर्सा लेते (आए) हो (सो तो है) हद का। अभी आओ फिर, बेहद के बाप से वर्सा लो। तो लो माना हम ले रहे हैं। बेहद का कौन-सा वर्सा? अरे, बेहद का बाप बेहद का वर्सा देंगे ही स्वर्ग में ; क्योंकि स्वर्ग का रचता है और स्वर्ग में गाया जाता है ...कि 21 पीढ़ी राज और भाग। भला पीढ़ी क्यों कहते हैं? अरे भई, बुड्ढे होकर मरेंगे, अकाले मृत्यु भी बिल्कुल ही नहीं आएगी। तुमको रोना-पीटना या विधवा बनने की दरकार नहीं पड़ेगी। यहाँ विधवा बनती हैं ना। अरे, आजकल तो... इतने जास्ती नहीं है। फैशन फिरता जाता है। नहीं तो आगे 'या हुसैन' बहुत करती हैं, 12 महीने तो एकदम बाहर ही नहीं निकलती हैं, पुराना कपड़ा एकदम बना करके बैठ जाती हैं और यह तो समझते हो कि अंत तक भी उनकी याद रहती है। अच्छा, यह तो मुसीबत हो गई ना। वहाँ ये बातें बिल्कुल हैं नहीं। कोई भी विधवा बनती नहीं हैं। कोई रोते नहीं हैं, कुछ भी नहीं एकदम। बच्चों को भी रूलाने की दरकार नहीं रहती है। कोई तो न रड़ते हैं तो उनको रड़ाते हैं, (जो) इनका मुख बड़ा हो, छोटा न हो जावे। बच्चों को जोर से भी रड़ाते हैं। वहाँ रड़ाने-रड़ने की कोई बात ही नहीं है। यह तो आप सभी बच्चे समझते हो कि बरोबर हम अभी बेहद के बाप से फिर से कल्प पहले मुआफिक वर्सा ले रहे हैं; क्योंकि अभी 84 जन्म पूरा हुआ। फिर से हमको 21 जन्म का वर्सा ज़रूर मिलना ही है। जो वर्सा मिला हुआ था वो पूरा हो गया। अभी हमको जाना (है), अब ये याद तो रखना चाहिए ना। अरे, परंतु बच्चों को (यह) याद भूल जाती है। अगर ये निरन्तर याद रखते रहें तो इनका विकर्म भी विनाश होता रहे ना ; क्योंकि बाप को याद करे, वर्से को याद करे, मन्मनाभव, मद्याजी भव। मन्मनाभव, मद्याजीभव का अर्थ कितना सहज है। अर्थ लिखा भी हुआ है। यानी भले वो गीता झूठी है, कुछ-कुछ तो उसमें सच्चा है ना। लिखा भी है मन्मनाभव कि मुझ अपने परमपिता-परमात्मा यानी बाप को याद करो। अभी कृष्ण तो नहीं कहेंगे मुझे(मुझ) परमपिता-परमात्मा (को) याद करो ; क्योंकि मेरे पास आना है। वो तो परमात्मा आत्माओं को कहेंगे ; क्योंकि मच्छरों के मिसल जाने वाले हैं तो आत्माएँ आत्माओं को

फालो करेंगी या कृष्ण देहधारी को फालो करेंगी? कृष्ण देहधारी कैसे जा सकेंगे? वो कह कैसे सकते हैं? ऐसे भी नहीं कह सकते हैं कि मुझ आत्मा को (याद करो)। नहीं। उनका तो नाम ही कृष्ण है ना। बाप ने समझाया है कि बच्चे, मेरा नाम कोई भी देहधारी का पड़ता नहीं है। मेरा नाम ही है 'शिव'। मेरे निराकार बाप का नाम ही शिव है। और तो सबका नाम है। अभी कृष्ण कैसे कहेंगे कि मन्मनाभव अर्थात देह सहित सब कुछ त्यागकर मुझ बाप को याद करो। वो कह कैसे सकते हैं? क्योंकि उसको शरीर है। ये तो कह सकते हैं ना ; क्योंकि इनको तो अपना शरीर है नहीं। तो कहते हैं कि देखो, तुम्हारा भी शरीर नहीं था और फिर जब तुमको भेजा तब यह शरीर लिया। अभी तुमको स्मृति बहुत आई इस नाटक की, सारे ड्रामा की, ड्रामा के आदि-मध्य-अंत (की)– बाप सृष्टि रचता कैसा है जिसको क्रियेटर कहा जाता है? मनुष्य सृष्टि रचता कैसे है? कब रचता है? क्यों रचता है? क्योंकि सृष्टि तो ज़रूर है ना। तो फिर नाम भी लिखा हुआ है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के लिए। ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि की रचना। तो नई सृष्टि कौन सी? ज़रूर पुरानी है ना, उनमें से रचता होगा ना। आना तो ज़रूर पुरानी सृष्टि पर पड़े ना। तो आ करके फिर कहते भी हैं मानुष को देवता बनाने (आता हूँ)। यहाँ मनुष्य है ना। देखो, कितने मनुष्य हैं! सारी मनुष्य सृष्टि भरी-पूरी है। अभी उनमें से आ करके बाप कहते हैं कि बच्चों, मैं तुमको पढ़ाय करके फिर से मनुष्य से सो देवता बनाता हूँ। तुम सो देवता पूज्य थे, तुम सो फिर पुजारी बन गए। अभी कैसे बने? कितने वर्ण में आए? सो तो बाप ने समझाय दिया जो कि सिद्ध तो कर देते हैं ना। 84 जन्म सिद्ध कर देते हैं, सो भी समझाया है। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं कि 84 जन्म या 84 लाख जन्म मनुष्य लेते हैं। पर कौन? क्या सभी 84 जन्म (या) 84 लाख (जन्म लेते हैं)? अच्छा, अभी जो विनाश होगा, कभी तो सृष्टि बढ़ती है। वो कितने जन्म लेगा(लेंगे)? क्या 84 जन्म लेगा(लेंगे) 50/25 वर्ष के अंदर? तो बाप बैठ करके समझाते हैं और सहज होता है बच्चों को कि बरोबर हम 84 का चक्कर लगाय, उसी को स्वदर्शन चक्र कहा जाता है ना। अभी कहाँ उसमें कथाएँ लिखी हैं, स्वदर्शन चक्र छोड़ा तो यह गला कट गया, फलाना हो गया। देखो, ये कितनी बातें निकलती हैं। उसको हथियार बनाय दिया। नहीं। अब बच्चों को यानी आत्माओं को ये स्मृति आई कि हमने 84 जन्म ऐसे-ऐसे भोगे, अभी चक्र पूरा होता है और सब ड्रामा खत्म होता है। अब फिर तुमने(तुमको) ड्रामा रिपीट करना है। नये रिपीट करने हैं तो पहले-2 तो प्राचीन आ०स०दे०दे०धर्म ज़रूर चाहिए, जो प्रायःलोप हो गया है। तो वो स्थापक बैठ करके कहते हैं मैं फिर से वही देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। ....गीता शास्त्र उस देवी-देवता धर्म का है ज़रूर ; पर उनमें तो ये बातें कुछ (है) नहीं, उनमें तो लिखा हुआ है ईश्वर सर्वव्यापी है। बस, बात ही एक उठाते हैं 'निपुटी'। इसको कहा जाता है निपुटी। यानी ये बाप के पुट नहीं हैं। ये कृष्ण के पुट तो हो नहीं सकते हैं। इसको निपुटी कहते हैं। यानी हम बाप के पुट नहीं हैं। नास्तिक हैं। हम बाप के बच्चे नहीं हैं। जो कहते हैं 'गॉड फादर', ये ऐसे ही कहते हैं। यानी समझ भी तो कोई(कुछ) चाहिए ना। जबकि फादर कहते हैं फिर उनको कह देना कि सबमें है, ये तो फिर फादर को ही ब्रदर बना देते हैं। देखो, कितनी मूर्खता है एकदम! कहते भी हैं ओ गॉड फादर! मर्सी ऑन मी, रहम करो। अच्छा, तो बाप आते

हैं। (कहते हैं) आता हूँ रहम करने। रहम क्या करूँ तुम बच्चों को(पर)? तुम दुःखी हो ना, तो तुमको दुःख से लिबरेट करना है, तुमको सुखी करना है ना। बाप का धर्म क्या है? बच्चों को सुखी करना। सो तो बच्चे जानते हो कि बरोबर हम कल्प-कल्प हर 5000 वर्ष के बाद आता हूँ, भारत को आ करके हीरे जैसा बहुत सुखी बनाता हूँ। हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस, बड़ी आयु हीरे जैसा बनाता हूँ, भारतवासियों को। बाकी (जो) इतने सभी हैं, उन सबको निर्वाणधाम में भेज देता हूँ, जिसके लिए भक्ति करते हैं। भक्ति करते ही हैं भगवान से मिलने के लिए, भगवान से हमको कोई सुख चाहिए, वो नहीं समझते हैं ; क्योंकि सुख के लिए सन्यासियों ने डराय दिया है। सुख तो कागविष्टा समान है, सुख थोड़े ही लेना चाहिए। यहाँ तक...उन्होंने डराय दिया, नहीं, यहाँ असुर रहना ही नहीं चाहिए। एक तो बोलते हैं कि सुख नहीं चाहिए, फिर दूसरा बोलते हैं यह ड्रामा में ही न आवे, जिसको मोक्ष कहते हैं। अभी मोक्ष तो किसको मिलना नहीं है। बाप आ करके समझाते हैं– बच्चे, यह है प्रीऑर्डेन्ड इम्पेरिशेबल वर्ल्ड ड्रामा यानी बना-बनाया यह अविनाशी ड्रामा है। सारी सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी सतयुग से कलियुग तक चक्कर लगाती ही रहती है, जिसको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है। जिसको गवर्मेन्ट ने चरखा नाम रख दिया। चरखा और चक्र में फर्क क्या है? वो भी फिरता है, वो भी फिरता है; परन्तु वो जनावर बुद्धि, पत्थरबुद्धि और बाप पारसबुद्धि। वो समझ देते हैं कि बच्चे, यह जो चक्र भारत में दिखलाते हैं, ये स्वदर्शन चक्र है। यह जो चरखा दिखलाया है वो भी नहीं है और यह जो दुनिया (में) नाटकी पर दिखलाते हैं– शीश कट गया, फलाना हो गया, कृष्ण चरित्र या कंस वध। कंस वध का एक नाटक दिखलाते हैं, आगे देखना अभी है या नहीं। उसमें दिखलाते हैं कृष्ण स्वदर्शन चक्र से गला काटते रहते हैं। तो उसका यह अर्थ है, यहाँ हिंसा की कोई बात ही नहीं है बिल्कुल ही। ईश्वर से जब हमको वर्सा मिलना होता है तो इसमें हिंसा की कोई बात ही नहीं मिलती है। नहीं, हम बाप से वर्सा लेते हैं। बाप से वर्सा लेने के लिए कोई को मारना होता है क्या?...हम लौकिक बाप से वर्सा लेने के लिए कोई किसको कतल करते हैं क्या? कोई लड़ाई करते हैं क्या? ये भी तो बेहद के बाप से हमको वर्सा लेना है। बस, हम तो कोई लड़ाई-वड़ाई किसी से करते ही नहीं हैं। हम बाप से , जैसे बाप श्रीमत देते हैं बाप को याद करो, अब बाप के वर्से को, स्वर्ग को याद करो, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा, तुम जाकर राजाई लेंगे। बस। अभी इनमें कोई लड़ाई की बातें हैं? गीता और महाभारत में कितनी लड़ाई की बातें रख दी हैं। लड़ाई है ज़रूर; परन्तु तुम बच्चों की थोड़े ही है। पाण्डवों की लड़ाई थोड़े ही है कौरवों के साथ। पाण्डवों की लड़ाई तो कोई के साथ भी नहीं है। ये तो योगबल से अपने बाप से वर्सा ले रहे हैं। इसको कहा ही जाता है योगबल। तो वर्सा योगबल से बेहद के बाप से (लेंगे), सो तो ज़रूर नई सृष्टि का लेंगे।.....तो देखो, इन्होंने कोई से लड़ाई थोड़े ही की है। इन्होंने कैसे ली? सो तो तुम अभी ले रहे हो, योगबल से स्वर्ग की राजाई। अगर कोई लड़ाई की होती तो स्वर्ग कहाँ से आया? लड़ाई की होगी तो नर्क में की होगी, नर्क में तो कचड़-पट्टी पड़ी है। क्या है ये? यह जो लिखा हुआ है दैत्यों और देवताओं की लड़ाई, यह संगम(युग की बात) है ना ; क्योंकि दैत्यों का विनाश होता है, देवताओं की स्थापना होती है, तो वो समझते हैं

कि दैत्य और देवताओं की लड़ाई लगी होगी; परन्तु लड़ाई तो है नहीं। न है दैत्य-देवताओं की, न है कौरव और पाण्डवों की लड़ाई। कुछ भी नहीं है। हाँ, वो बात ठीक है कि बरोबर कलश मिला और जो असुर थे उनको पिलाया देवता बनाने के लिए। इसमें भी लड़ाई की तो कोई बात ही नहीं निकलती है। वो भी तो लिखा हुआ है ना कि कलश निकला, वो माताओं को दिया। शक्ति सेना को दिया, सो तो मिल रहा है ठीक। अभी कलश मिला, अमृत पिया, मनुष्य अमृत से देवता बना। लड़ाई की बात इसमें भी नहीं उठती है। बाकी हाँ, अब तो विनाश के लिए इन्टरनेशनल लड़ाइयाँ लगनी ही हैं। सब आपस में लड़-झगड़ कर मर जाएँगे और.....तुमको चुप्पी से एकदम बाबा कहते हैं– तुम कोई भी तकलीफ नहीं करो, किसको घुसा मारने की भी याद नहीं, ना मुख से कुछ कहने का है। समझने की बात है। बाप को याद करो। देखो, कोई भी तकलीफ नहीं है। ड्रामा पूरा होता है ना। तो ये सभी खत्म होने का है। यह तो पुराना घर है। सो तो तुम जानते हो कि ....कैलेमिटीज़ आएँगी, तो एकदम खत्म ही हो जाने का है और तुम्हारे होते-2 हमको देखना है जरूर। जो दिव्य दृष्टि से चीज़ देखी है, सो इन आँखों से देखनी है ज़रूर।.....सो इस शरीर के होते देखेंगे। फिर जो दिव्य दृष्टि से वैकुण्ठ देखता है उसे फिर नया शरीर मिलेगा, फिर भी इन आँखों से हम वहाँ होंगे। वहाँ होंगे; फिर हमको यह ज्ञान नहीं होगा। इसलिए यह जो जन्म है, इसको ही कहा जाता है मनुष्य का यह अंतिम जीवन अमूल्य है, नहीं तो मनुष्य की चमड़ी भी काम में नहीं आती है। बाबा कहते हैं गाय की (चमड़ी) की जूती भी बन जाती है। मनुष्य तो कोई काम में नहीं आता है। तो कहा जाता है अमूल्य कौन सा? तुम्हारा यह अंतिम जन्म बहुत अमूल्य है। क्यों? इस जन्म से तुम हीरे जैसे बनती हो। वो जो जन्म पास किया है ना, अमूल्य था। सतयुग-त्रेता तक वो अमूल्य हीरे जैसा जन्म चला। पीछे जो-जो भी वर्ष आया, वो न्यू नहीं, वो पुराना वर्ष होता गया, जैसे न्यू ईअर कहते हैं ना। यह न्यू ईअर क्राईस्ट का है। यह तो पुराना हो जाता है। जितना देरी होती है इतना पुराना कहते हैं। न्यू क्या कहेंगे इनको! न्यू वर्ष थोड़े ही है; परन्तु यह समझ की बात है कि पुराना वर्ष है। नया मकान है, जो वर्ष गुजरेगा, ये मकान पुराना होता जाएगा। उसके (लिए) तो 'नया' नाम ही नहीं ले सकते हैं ;परंतु नहीं, ऐसा गाया जाता है कि पहला-2 जो मकान होता है, वो नया होता है, वो ही मकान (फिर) पुराना। ये भी ऐसे ही है। ये सृष्टि रूपी जो मकान, जिसमें हम रहते हैं, ये नया था, अभी पुराना बना है। आगे इनको प्राचीन भारत कहा जाता था, जिसकी महिमा है। अभी तो पुराना हो गया है। पुराने–नए में फर्क देखते हो? अपने पुराने महल में और फिर नए महल में फर्क क्या है? देखो, ये सिन्धवरकी हैदराबाद में क्या रहते थे? कहाँ? वहाँ क्या था? सबको याद तो होगा ना! कहाँ-2 रहते थे, कोई का फुलेलियो ..पर घर, कोई का ईंट का घर किया, अभी तो देखो 20-20 मारें बन रहीं हैं; क्योंकि गिरने में सहज हो जाएँगे। बहुत बन जाए, तो फिर कोई भी मारा नहीं बनने का है। ये बहुत मारा क्यों बनते हैं ? जमीन नहीं है। जमीन का मूल्य अधिक (है)। देखो, जमीन का मूल्य कितना हो गया है! अमेरिका में भी तो जमीन का बहुत मूल्य होगा ना। तो यह आर्टीफिशयल है सबकी; क्योंकि जमीन नहीं है। यानी जहाँ ज़रूरत है वहाँ जमीन नहीं है। जमीन तो ये बहुत पड़ी हुई है..। खेती

होती है। जमीन कम थोड़े ही है; परन्तु नहीं, जहाँ धंधा-धोरी होता है (वहाँ जमीन नहीं है)। जितनी चाहिए उतनी बनावें। फुल 50-60 मार भी बनावें। फिर एक मार भी नहीं मिलेगी। वहाँ कोई मार ही नहीं बनती है। तो नई दुनिया में और पुरानी दुनिया में (फर्क देखो।) मनुष्य ये समझते हैं कि अपना जो काँग्रेस (है)– दिल्ली को न्यू बना (रहे हैं), ...भारत को न्यू बना रहे हैं। अरे नहीं, ये तो पुराना बना रहे हो ना। ये मकान नया बनाया तो दिल्ली नई बनी, यह भी कोई बात है!....इसमें प्लैन्स बनाने हैं। हम इण्डिया को नया बना रहे हैं, बहुत-2 बहिश्त बना देंगे। अरे नहीं, तुम लोगों का प्लान ही है इण्डिया को दोज़ख बनाने का। बहिश्त तो बाप बनाएगा ना। यह पुराना होने का ही है ना। तुम जो भी कर्तव्य करोगे वो इनको दोज़ख बनाने का, नर्क बनाने का (ही करोगे)। जप,तप,तीर्थ,होम,यज्ञ, बहुत ही होंगे। तुम बैठकर देखेंगे। बहुत यज्ञ रचेंगे। जब कड़ी-2 आफतें आएँगी (तो) पीछे ये सभी यज्ञ रचना शुरू कर देंगे। देखो, कितने यज्ञ रचते हैं कि ये आपदाएँ छूट जाएँ; पर नहीं, सभी आपदाएँ तो इस यज्ञ में स्वाहा होनी हैं। वो यज्ञ (इसलिए) रचते हैं (कि) आपदाएँ नहीं आवें। यहाँ बाप कहते हैं– इस ज्ञान यज्ञ में सब, जो भी हैं वो पिछाड़ी में स्वाहा हो जाएँगे। मनुष्य.....स्वाहा करेंगे ना। बाप कहते हैं मेरे इस ज्ञान यज्ञ में ये जो भी सृष्टि रूपी कचड़ा और सामान देखते हो, वो सभी स्वाहा हो जाएगा यानी खत्म हो जाएगा। देखो, कहाँ की बात कहाँ! आज गुरूवार है। तो बाबा फिर भी अंत में कहते हैं कि ये तो डिटेल में समझाया है, नटशेल में बाप को याद करो। जितना-2 याद करेंगे, भले कहाँ भी रहो बच्ची, बाँधेली बहुत हैं ना, वो क्या करेंगी भली(भला)। उनके लिए कहाँ बेचारी सुन सके तो कितना सहज है। बाँधेलियों को कहते हैं, मीठी बच्ची, क्यों मार खाती हो? तुम घर में बैठ करके बाप को याद करो और वर्से को याद करो और बाप से बहुत मीठी-2 बातें करो। बाबा, हम बंधन में हैं। ड्रामा अनुसार तो हैं बंधन में। कल्प पहले भी ऐसे होंगी। अच्छा, अभी आप कहते हो ना कि मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा और फिर पवित्र भी तो रहना है। तो बाबा, पवित्रता की मुसीबत आ जाती है। ये पवित्रता पर नर छोड़ते ही नहीं हैं। नहीं, यह बात जरा मुश्किल सी है। पवित्र तो ज़रूर बनेगा(बनेंगे)। ये जो अबलाओं पर अत्याचार होते हैं, ये खास इस बात के (ऊपर होते हैं)। तो ज़रूर तुमको मार भी खानी पड़ेगी। बाप कहते हैं वो तो मैंने सहज बात बनाया, बाकी तुम कहेंगी ये अपवित्र बनाते हैं, ये नहीं, ये तो फिर मार खाओ। उसमें तो मार नहीं खाएँगी। घर में रहेंगी, बाप को याद करेंगी, उसमें तो कोई मार नहीं देंगे। मारेंगे तुमको यह विख के लिए। अभी विख के लिए ही तुम्हारा काम है बहादुर बनना, जो विख तुम न दो। सो तो आजकल तो गवर्मेन्ट चाहती है कि बच्चे जास्ती पैदा न हों। नहीं तो देखो, आज चीन में लिखा है कि चीन में जो दो या तीन बच्चे वाले होंगे उनको राशन मिलेगा, जास्ती बच्चे वालों को राशन नहीं मिलेगा। तो ये लिखते ही यहाँ के ऊपर कलम लगाने का। ये युक्ति रचते हैं ना। अरे, युक्तियाँ बहुत होती हैं गवर्मेन्ट में प्रोपेगैण्डा। लिखते हैं चीन के लिए, करेंगे यहाँ। फिर तुम्हारे ऊपर आएगा कि भई जिसके पास दो या तीन बच्चे (होंगे) उनको राशन मिलेगा; इसलिए बच्चे बन्द करो। अभी ऐसे थोड़े ही कोई बच्चे बन्द करेंगे। काम महाशत्रु है, वो तो कुछ भी करो तो भी बच्चे ज़रूर पैदा करेंगे। भले मनुष्यों को

कहा जाए कि बच्चे बन्द करो। अच्छा, मिलेगा क्या? उससे फायदा क्या है? फायदा तो कोई दिखलाते नहीं हैं। यहाँ तो देखो, बाबा बोलते हैं, बच्चे, मुझे याद करो सिर्फ एक अंतिम जन्म तो मैं तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। देखो, यह प्रतिज्ञा है बाप की। सब पापों से मुक्त हो जाएँगे और पापों से मुक्त हो करके तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। है ना कथा! कृष्ण ने सत्यभामा भगाई, जामवन्ती भगाई, फलानी भगाई। अभी वो तो हुए गपोड़े। कृष्ण थोड़े ही भगाएगा सो भी बालक। एक तरफ में कृष्ण ने भगाई, एक तरफ में ज्ञान दिया, अरे मिलता ही नहीं है। नॉनसेन्स बुद्धि भी नहीं कहें। एक तरफ में कृष्ण को कहते हैं 108 रानियाँ थीं, जामवन्ती भगाई, एक तरफ श्रीकृष्ण भगवानुवाच– हे अर्जुन! फलाना! यह गीता सुनाते हैं। कोई खोरा लगता है? अब यह हुआ ड्रामा। अभी तुम बच्चों को फिर नर्कवासी से हम स्वर्गवासी बनाय रहे हैं। चलो बच्ची , क्विक। .....के लिए कितने प्रबंध रहते हैं। (रिकॉर्डः– ओम नमः शिवाय.....) देखो, महिमा सबसे न्यारी है ना। शिवबाबा की महिमा है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप यानी पिता। फिर कहा जाता है ज्ञान का सागर, शांति का सागर, पवित्रता का सागर, सुख का सागर, आनन्द का सागर, सबका सागर ही सागर। अभी ये महिमा फिर ल०ना० या कृष्ण को नहीं दी जाती है। उनकी फिर महिमा क्या है? सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म। अभी देखो, है ना उनकी महिमा ही न्यारी! और कोई की भी महिमा ....। वो जो....महिमा है वो ऐसा फिर सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, ...मनुष्य को ऐसे बनाता है, मनुष्य को देवता बनाता है। पीछे तुम स्वर्गवासी बनेंगे या वैकुण्ठ वासी बनेंगे। अच्छा, सब बच्चों को मिल गया यहाँ? जिसको न मिला हो, टोली कहो, प्रसाद कहो, हाथ उठावे। अरे, यहाँ अभी बहुत नहीं मिला है। जो भी मनुष्य मात्र हैं, उनका बाप भी है, टीचर भी है, तो गुरू भी है। तो है ना उनकी महिमा न्यारी?

अच्छा, बाप, माँ, दादा, ऐसे कहें? देखो, ये वण्डरफुल है ना। यानी परमपिता परमात्मा को(के लिए) गाना 'तुम मात-पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते स्वर्ग के सुख घनेरे'। यह एक को गाया जाता है। तो बाबा भी ऐसे कहे ना कि मात-पिता...। तो बाबा कहते हैं– बाबा या पिता, यह मम्मा और फिर दादा। ऐसे कहेंगे ना! या पहले दादा, पीछे मम्मा? यह भी समझ की बात है। अच्छा, तुम लकी सितारों प्रति यादप्यार नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार और माताओं को वन्दे मातरम्। ..... शिवशक्ति सेना हो ना, इसलिए वन्दे मातरम्। माता गुरू बिगर कभी कोई का उद्धार होना असंभव है। साधु,संत,महात्मा सभी शक्तियों के चरणों में गिरने का है। वन्देमातरम् और बच्चों से गुडमॉर्निंग। यादप्यार तो दे ही दिया।

✷✷✷✷✷✷✷✷